मेन्स मास्टर

वित्त आयोग को लोकलुभावनवाद पर अंकुश लगाना चाहिए

संदर्भ

यह लेख भारतीय राज्यों में बढ़ती लोकलुभावनवाद और अस्थिर खर्च के मुद्दे को संबोधित करने में 16वें वित्त आयोग की चुनौती पर केंद्रित है। यह आरबीआई द्वारा उठाई गई चिंताओं, लोकलुभावनवाद को रोकने में चुनौतियों, संभावित समाधानों और जिम्मेदार राजकोषीय प्रथाओं को बढ़ावा देने में वित्त आयोग की भूमिका पर प्रकाश डालता है। अंततः, यह लोकलुभावन नीतियों के कारण राज्यों में बढ़ती राजकोषीय अनुशासनहीनता के बीच मजबूत वित्तीय प्रबंधन की वकालत करने में आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है।

आगामी 16वें वित्त आयोग (एफसी) को एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ रहा है: बढ़ती लोकलुभावनवाद और भारतीय राज्यों द्वारा अस्थिर खर्च के मुद्दे को संबोधित करना। जबकि एफसी का प्राथमिक जनादेश राज्यों को केंद्रीय करों और अनुदानों के हस्तांतरण की सिफारिश करना है, "मजबूत वित्त" को बढ़ावा देने में इसकी व्यापक भूमिका लोकलुभावन-संचालित राजकोषीय अनुशासनहीनता पर चिंताओं से निपटने की आवश्यकता है।

आरबीआई रिपोर्ट में उजागर मुद्दे:

• **पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) में बदलाव:** नई पेंशन योजना (एनपीएस) को अपनाने के बाद राज्यों का राजकोषीय रूप से भारी ओपीएस पर वापस लौटना एक बड़ी चिंता का विषय है। आरबीआई ने ओपीएस के तहत 4.5 गुना अधिक देनदारी का अनुमान लगाया है और विकास बाधाओं और भविष्य के लाभों से समझौता होने की चेतावनी दी है।

• **अस्थिर सब्सिडी:** अत्यधिक सब्सिडी, जो अक्सर लोकलुभावन चुनावी वादों से जुड़ी होती है, राज्य के वित्त पर दबाव डालती है। आरबीआई की रिपोर्ट एफसी से सुधारों, व्यय गुणवत्ता और राजकोषीय स्थिरता के आधार पर उच्च सशर्त अनुदान पर विचार करने का आग्रह करती है।

• **राजकोषीय हतोत्साहन की आवश्यकता:** सुरक्षा जाल के रूप में अनुदान का गैर-महत्वपूर्ण प्रावधान राज्यों को राजकोषीय सुधारों से बचने के लिए प्रोत्साहित करता है। रिपोर्ट जिम्मेदार खर्च को प्रोत्साहित करने के लिए अनुदान को राजकोषीय मापदंडों पर प्रदर्शन से जोड़ने का सुझाव देती है।

लोकलुभावनवाद पर अंकुश लगाने में चुनौतियाँ:

• **लोकलुभावनवाद की कठिन परिभाषा:** लोकलुभावन या गैर-लोकलुभावन के रूप में योजनाओं का वर्गीकरण व्यक्तिपरक है और राजनीतिक असहमति की संभावना है।

• **कल्याणकारी योजनाओं पर राज्यों का विशेषाधिकार:** निर्वाचित राज्य सरकारों का तर्क है कि उन्हें, एफसी को नहीं, कल्याणकारी कार्यक्रमों पर निर्णय लेना चाहिए क्योंकि वे अपने मतदाताओं के प्रति जवाबदेह हैं।

• **राजनीतिक हस्तक्षेप:** एफसी के माध्यम से प्रतिबंध लगाने को केंद्र द्वारा राज्यों की विधायी शक्तियों में हस्तक्षेप के रूप में गलत समझा जा सकता है।

संभव समाधान:

• राजकोषीय दक्षता पर ध्यान दें: एफसी को अपनी हस्तांतरण गणना में राजकोषीय दक्षता मानदंडों को मजबूत महत्व देने पर विचार करना चाहिए। यह राज्यों को राजकोषीय समेकन उपाय करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

• **सशर्त हस्तांतरण:** अनुदान के उच्च शेयरों को सुधारों, गुणवत्ता व्यय और राजकोषीय स्थिरता से जोड़ने से जिम्मेदार वित्तीय प्रबंधन के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

• **आम सहमति बनाना:** हालांकि केंद्र और राज्यों के बीच आम सहमति आदर्श है, लेकिन भारत के अस्थिर राजनीतिक परिदृश्य में इसे हासिल करना एक चुनौती बनी हुई है।

वित्त आयोग की भूमिका:

• **वित्तीय तनाव को उजागर करना:** एफसी सीधे तौर पर लोकलुभावनवाद को विनियमित नहीं कर सकता है, लेकिन यह इन नीतियों के कारण पैदा होने वाले वित्तीय तनाव को उजागर कर सकता है, राज्यों से ऐसी प्रथाओं में शामिल होने से पहले दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करने का आग्रह कर सकता है।

• **मजबूत वित्त को बढ़ावा देना:** अपनी सिफारिशों में राजकोषीय जिम्मेदारी और दक्षता पर जोर देकर, एफसी राज्यों को स्थायी वित्तीय प्रथाओं की ओर प्रेरित कर सकता है।

निष्कर्ष:

भारतीय राज्यों में लोकलुभावनवाद पर अंकुश लगाने के लिए सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता है। हालांकि वित्त आयोग के पास ऐसी नीतियों को विनियमित करने की प्रत्यक्ष शक्ति नहीं हो सकती है, लेकिन यह मजबूत वित्तीय प्रथाओं को बढ़ावा देने और अस्थिर खर्च से जुड़े जोखिमों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। 16वें एफसी को एक विकट चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन एक सूक्ष्म और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाकर, यह राज्य स्तर पर जिम्मेदार वित्तीय प्रबंधन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भविष्य का संकेत

संदर्भ

टीएच के संपादकीय में इसरो के हालिया वैज्ञानिक मिशनों पर चर्चा की गई है, जिसमें तकनीकी से वैज्ञानिक प्रयासों में बदलाव, सहयोगात्मक प्रयासों और विविध पेलोड को प्रदर्शित करने पर जोर दिया गया है। यह अंतरिक्ष अन्वेषण लक्ष्यों के बीच इसरो की बढ़ती भूमिका और तकनीकी प्रगति के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान को संतुलित करने में आने वाली अनूठी मांगों पर प्रकाश डालता है।

• **हाल के इसरो मिशन:** चंद्रयान -3 की सफलता के बाद, इसरो ने दो वैज्ञानिक मिशन लॉन्च किए।
• आदित्य एल-1 अंतरिक्ष जांच का उद्देश्य सूर्य का अध्ययन करना है।
• XPoSat मिशन खगोलीय घटनाओं में ध्रुवीकृत एक्स-रे के अवलोकन पर केंद्रित है।
• **XPoSat मिशन विवरण:** इस मिशन को 1 जनवरी को C58 उड़ान पर PSLV का उपयोग करके दो भागों में लॉन्च किया गया था। यह नासा के इमेजिंग एक्स की तुलना में उच्च एक्स-रे ऊर्जा का लक्ष्य रखते हुए, एक्स-रे ध्रुवीकरण का अध्ययन करने के लिए दूसरा अंतरिक्ष-आधारित प्रयोग है। -रे पोलारिमेट्री एक्सप्लोरर।
• रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा विकसित POLIX पेलोड, 8-30 केवी ऊर्जा सीमा के भीतर एक्स-रे का निरीक्षण करता है।
• XSPECT पेलोड, इसरो के यू.आर. द्वारा बनाया गया। राव सैटेलाइट सेंटर, 0.8-15 केवी के बीच ऊर्जा के एक्स-रे का अध्ययन करता है। पांच वर्षों में, इसका लक्ष्य लगभग 50 स्रोतों से उत्सर्जन की जांच करना, पल्सर और ब्लैक होल में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।
• **इसरो का विज्ञान-प्रौद्योगिकी संतुलन:** ऐतिहासिक रूप से, इसरो ने वैज्ञानिक अन्वेषण की तुलना में तकनीकी मिशनों को प्राथमिकता दी है, लेकिन हाल के मिशन वैज्ञानिक प्रयासों की ओर बदलाव दिखाते हैं। C58 मिशन इस संतुलन का उदाहरण है।
• **C58 मिशन का दूसरा भाग:** XPoSat को पृथ्वी के चारों ओर 650 किलोमीटर की गोलाकार कक्षा में लॉन्च करने के बाद, PSLV चौथा चरण एक अल्पविकसित उपग्रह में परिवर्तित हो गया। 350 किलोमीटर ऊंची कक्षा में स्थित, यह निजी संस्थाओं और इसरो केंद्रों से 10 पेलोड ले जाने वाले एक कक्षीय परीक्षण स्थल के रूप में कार्य करता है।
• **पेलोड हाइलाइट्स:** पेलोड में क्यूबसैट प्रोपल्शन, मोनोप्रोपेलेंट थ्रस्टर्स, रेडिएशन शील्ड्स, हीटर-कम खोखले कैथोड और नैनोसैटेलाइट प्लेटफॉर्म जैसी निजी संस्थाओं के विभिन्न योगदान शामिल हैं। इसरो ने इंटरप्लेनेटरी डस्ट काउंटर, ईंधन-सेल पावर सिस्टम और उच्च-ऊर्जा सेल जैसे पेलोड का योगदान दिया।
• **C58 मिशन का महत्व:** यह पेशेवर वैज्ञानिकों, विज्ञान में इच्छुक छात्रों और भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र से जुड़े एक सहयोगात्मक प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। यह मिशन एक ऐसे युग में इसरो की अनुकूलनशीलता को रेखांकित करता है जो स्थायी चंद्र स्टेशन की ओर बढ़ रहा है, जो ब्रह्मांड के बारे में मानवता की समझ के विस्तार के साथ तकनीकी प्रगति को संतुलित करता है।

भारत का 1991 संकट और आरबीआई गवर्नर की भूमिका

एस. वेंकिटरमनन: संकट और सुधारों के माध्यम से प्रबंधन की एक विरासत दिसंबर 1990 से दिसंबर 1992 तक भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर एस वेंकिटरमनन का हाल ही में निधन, एक ऐसे राजनेता के जाने का प्रतीक है जिसका कार्यकाल भारत के आर्थिक इतिहास में महत्वपूर्ण क्षणों द्वारा परिभाषित किया गया था। उनकी विरासत दो महत्वपूर्ण घटनाओं पर टिकी हुई है जो वित्तीय उथल-पुथल और उसके बाद के सुधारों के दौरान उनके नेतृत्व को रेखांकित करती हैं। आरबीआई में वेंकटरमणन का कार्यकाल भुगतान संतुलन के गंभीर संकट के साथ मेल खाता था और भारत की अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए सराहनीय प्रयास देखे गए, हालांकि बाद में अक्सर इसकी छाया पड़ गई।

सुधार. भारत के आर्थिक परिदृश्य में चुनौतियों और उसके बाद परिवर्तनकारी परिवर्तनों के बीच विविध आर्थिक दृष्टिकोणों से जुड़ने में उनके सक्रिय उपाय और खुलापन मान्यता के पात्र हैं।

वित्तीय संकट प्रबंधन:

• **भुगतान संतुलन संकट (1990-1991):** कुवैत पर सद्दाम हुसैन के आक्रमण के बाद आवक प्रेषण में कमी और तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण भारत को गंभीर तनाव का सामना करना पड़ा।
• **वेंकटरमणन के नेतृत्व में आरबीआई की भूमिका:** उनके नेतृत्व में आरबीआई ने कठिन मुद्रा ऋणों को सुरक्षित करने के लिए सोने के भंडार का वादा किया, जिससे भारत को संभावित डिफ़ॉल्ट से बचने में मदद मिली।
• **महत्व**: इस कार्रवाई ने संभावित डिफ़ॉल्ट को रोका, भारत की वैश्विक विश्वसनीयता की रक्षा की और आयात के वित्तपोषण के लिए महत्वपूर्ण ऋण बाजारों तक पहुंच की रक्षा की, विशेष रूप से तेल आयात पर भारत की निर्भरता को देखते हुए।

आर्थिक सुधार और स्थिरीकरण:

• **आयात संपीड़न रणनीति**: आरबीआई ने आयात पर नकदी मार्जिन में उल्लेखनीय वृद्धि करके आयात संपीड़न उपायों को लागू किया, जिससे चालू खाता घाटा जीडीपी के 3% से घटकर 0.3% (1991-1992) हो गया।
• **तत्काल प्रभाव:** जबकि नरसिम्हा राव सरकार के दीर्घकालिक उपायों ने भुगतान संतुलन में सुधार करने में योगदान दिया, तत्काल सुधार का श्रेय मुख्य रूप से वेंकटरमणन के तहत आरबीआई द्वारा आयात संपीड़न रणनीति को दिया गया।
• **संकट के बाद की पहचान:** संकट प्रबंधन के वास्तुकारों पर डॉ. मनमोहन सिंह की टीम के नेतृत्व में बाद के आर्थिक सुधारों की छाया पड़ गई, जिसने अधिक ध्यान आकर्षित किया।

चुनौतियाँ और पारदर्शिता:

• **हर्षद मेहता घोटाला:** वेंकटरमणन का कार्यकाल हर्षद मेहता घोटाले के बीच समाप्त हुआ, जिससे आरबीआई की निगरानी में प्रतिभूति लेनदेन में अनियमितताओं के कारण उनका कार्यकाल खराब हो गया।
• **गवर्नर का खुलापन:** वेंकटरमणन ने विभिन्न प्रकार के अर्थशास्त्रियों के साथ जुड़कर उल्लेखनीय खुलेपन का प्रदर्शन किया, मौद्रिक नीति और भुगतान संतुलन संकट से संबंधित चर्चाओं के लिए महत्वपूर्ण आवाजों को आमंत्रित किया।
• **विकास अनुसंधान समूह:** पेशेवर बातचीत के माध्यम से आरबीआई कर्मचारियों और बाहरी हितधारकों के बीच अंतर को पाटने का प्रयास किया गया, हालांकि इसकी सफलता सीमित हो सकती है।
• **आरबीआई का वर्तमान रुख:** वर्तमान में आर्थिक रूढ़िवादिता का पालन करने पर आरबीआई का ध्यान संभवतः भारत की अर्थव्यवस्था की गहरी समझ पर हावी है, जैसा कि मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के संघर्ष से पता चलता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

कैसे रेडियोकार्बन डेटिंग ने विज्ञान में क्रांति ला दी

- रेडियोकार्बन डेटिंग वस्तुओं की आयु निर्धारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण पद्धति है, जो आइसोटोप कार्बन -14 का लाभ उठाती है, जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन -14 के साथ बातचीत करने वाली कॉस्मिक किरणों के माध्यम से पृथ्वी के वायुमंडल में लगातार बनती है।
- कार्बन-14 वायुमंडलीय ऑक्सीजन के साथ मिलकर रेडियोधर्मी कार्बन डाइऑक्साइड बनाता है, जो बाद में पौधों, जानवरों और कार्बन चक्र के माध्यम से जीवमंडल में प्रवेश करता है।
- 1940 के दशक की शुरुआत में प्रयोगशालाओं में कार्बन-14 के संश्लेषण से इसके 5,000 साल के आधे जीवन का पता चला, जिससे कार्बनिक पदार्थों की डेटिंग के लिए इसका उपयोग करने की अवधारणा सामने आई, जैसा कि 1946 में विलार्ड लिब्बी द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
- मृत्यु के बाद, जीवित जीव कार्बन का आदान-प्रदान बंद कर देते हैं, और कार्बन-14 का रेडियोधर्मी क्षय वैज्ञानिकों को शेष कार्बन-14 सांद्रता को मापकर मृत्यु के बाद बीते समय का अनुमान लगाने की अनुमति देता है।
- लिब्बी के युग में मुख्य रूप से आधुनिक तरीकों, विशेष रूप से एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एएमएस) के साथ गीगर काउंटरों का उपयोग किया जाता था, जो उच्च संवेदनशीलता और सटीकता प्रदान करते थे, 50 मिलीग्राम तक के छोटे नमूनों का विश्लेषण करते थे।
- रेडियोकार्बन डेटिंग का विकास जारी है, जो वैज्ञानिकों को अद्वितीय सटीकता और परिशुद्धता के साथ कार्बनिक पदार्थों की आयु को डिकोड करके हमारे अतीत के रहस्यों को उजागर करने में सक्षम बनाता है।

870 विद्यार्थियों के साथ पहला बालिका सैनिक स्कूल मथुरा में खुला

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सशस्त्र बलों में महिला सशक्तिकरण के लिए एक ऐतिहासिक क्षण को चिह्नित करते हुए, उत्तर प्रदेश के वृंदावन में भारत के पहले पूर्ण-गर्ल सैनिक स्कूल का उद्घाटन किया।
- यह स्कूल देश भर में 100 नए सैनिक स्कूल स्थापित करने की एक बड़ी पहल का हिस्सा है और लगभग 870 छात्रों को पूर्व सैनिकों के नेतृत्व में प्रशिक्षण प्रदान करेगा।
- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उद्घाटन समारोह में अपने भाषण में महिला सशक्तिकरण और समावेशी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।
- इसके अतिरिक्त, दोनों नेताओं ने अयोध्या में बुनियादी ढांचे के विकास की प्रशंसा की, एक ऐसे भविष्य की कल्पना की जो प्रगति को सांस्कृतिक महत्व के साथ जोड़ता है।

INCOIS का कहना है कि भारत को सुनामी का कोई खतरा नहीं है

- भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन है, जो प्रगति नगर, हैदराबाद में स्थित है।
- ESSO-INCOIS की स्थापना 1998 में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) के तहत एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी और यह पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन (ESSO) की एक इकाई है।
- INCOIS को व्यवस्थित और केंद्रित अनुसंधान के माध्यम से निरंतर समुद्री अवलोकन और निरंतर सुधार के माध्यम से समाज, उद्योग, सरकारी एजेंसियों और वैज्ञानिक समुदाय को सर्वोत्तम संभव समुद्री जानकारी और सलाहकार सेवाएं प्रदान करने का दायित्व दिया गया है।

नोबेल शांति विजेता मुहम्मद यूनुस बांग्लादेश श्रम कानून मामले में दोषी करार

- 2006 के नोबेल शांति पुरस्कार के प्राप्तकर्ता प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस को गरीबी उन्मूलन और गरीब महिलाओं के सशक्तिकरण में उनके काम के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।
- वह ग्रामीण फाउंडेशन के लिए प्रेरणा हैं और न्यासी बोर्ड के संस्थापक सदस्य हैं, जिन्होंने ग्रामीण बैंक बनाने के लिए पूंजीवाद को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ सफलतापूर्वक मिलाया है, जो एक माइक्रोक्रेडिट संस्थान है जो गरीबों को स्वयं के लिए छोटी मात्रा में कार्यशील पूंजी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। रोज़गार।
- ग्रामीण बैंक बांग्लादेश के 82,072 से अधिक गांवों में 7.5 मिलियन ग्राहकों को संपार्श्विक-मुक्त ऋण प्रदान करने के लिए विकसित हुआ है, जिनमें से 97% महिलाएं हैं।
- पिछले दो दशकों में, ग्रामीण बैंक ने सबसे गरीब लोगों को 6.5 बिलियन डॉलर से अधिक का ऋण दिया है, जबकि पुनर्भुगतान दर लगातार 98% से ऊपर बनाए रखी है।

वीरशैव-लिंगायत

- लिंगायतवाद हिंदू धर्म के भीतर एक विशिष्ट धार्मिक परंपरा है जो सर्वोच्च देवता के रूप में शिव की पूजा करती है, इसके अनुयायियों को लिंगायत या वीरशैव के रूप में जाना जाता है, जो देवता के व्यक्तिगत प्रतीक इष्टलिंग के रूप में शिव की पूजा पर जोर देते हैं।
- लिंगायतवाद 12वीं शताब्दी में एक सुधार आंदोलन के रूप में उभरा, जिसने जाति व्यवस्था, कर्मकांड प्रथाओं और ब्राह्मण पुरोहितवाद के अधिकार को चुनौती दी, सामाजिक समानता और आध्यात्मिक मुक्ति की वकालत की, जिसका नेतृत्व दार्शनिक और समाज सुधारक बसवा ने किया।
- लिंगायत अपनी विशिष्ट प्रथाओं के लिए जाने जाते हैं, जिनमें गले में इष्टलिंग पहनना, शिव के प्रति उनकी भक्ति का प्रतीक और समानता, सामाजिक न्याय और नैतिक जीवन के सिद्धांतों पर जोर देना शामिल है।
- वीरशैव-लिंगायत समुदाय का कर्नाटक में महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव है, जो सक्रिय रूप से सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा और राजनीति में शामिल है, जो क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को आकार देता है।
- लिंगायतवाद को हिंदू धर्म से अलग एक अलग धार्मिक पहचान के रूप में मान्यता देने के संबंध में चर्चाएं और बहसें उभरी हैं, जिससे एक विशिष्ट धर्म के रूप में इसकी मान्यता की वकालत करने वाले आंदोलन हुए हैं, जिनका प्रतिनिधित्व अखिल भारतीय वीरशैव महासभा जैसे संगठनों ने किया है।